वर्कशीट : निज़ामुद्दीन शहरी नवीकरण प्रोजेक्ट का अनुभव

ज्योत्स्ना लाल और हैदर मेहदी रिज़वी

आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन (एकेएफ), 2007 से निज़ामुद्दीन शहरी नवीकरण प्रोजेक्ट के ज़रिए स्थानीय समुदाय के जीवन की गुणवत्ता को सुधारने के उद्देश्य से काम कर रहा है। इसके लिए उसने धरोहर संरक्षण को एक प्रारम्भिक क़दम के रूप में इस्तेमाल किया है। इसमें एक महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप रहा है निज़ामुद्दीन बस्ती स्थित दक्षिण दिल्ली नगर निगम स्कूल को उसके भौतिक स्थान, कक्षा प्रक्रियाओं और सामुदायिक भागीदारी में सुधार के ज़रिए मज़बूत करना।

कक्षा प्रक्रियाओं में सुधार के लिए एक महत्त्वपूर्ण तत्व शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) को प्रस्तुत करना और उसका विकास करना रहा है। टीएलएम में हमेशा से वर्कशीट की मुख्य भूमिका रही है लेकिन लॉकडाउन के दौरान इनकी भूमिका बिल्कुल बदल गई। स्कूल बन्द होने के बाद निज़ामुद्दीन बस्ती के संसाधन रहित घरों में ऑनलाइन सीखने के लिए कोई मौक़ा नहीं था। विद्यार्थियों को जो साप्ताहिक शैक्षिक पैकेज दिया जाता था वही उनका मुख्य अकादमिक स्रोत बन गया। यह उस समय भी जारी रहा जब स्कूल थोड़े समय के लिए खुले थे। एकेएफ टीम ने बच्चों के अभिभावकों के साथ काम किया और इसके बाद अभिभावकों ने अपने बच्चों के साथ काम किया। प्राथमिक आयु वर्ग के बच्चों के बड़े भाई-बहनों ने भी उनके साथ काम किया और इससे भी बच्चों के साथ काम करने को लेकर अभिभावकों का आत्मविश्वास बढ़ गया। इस नियमित अकादमिक सहयोग की भूमिका उस समय साफ़ दिखाई दी जब 12 महीनों बाद बच्चों का आकलन किया गया।

निज़ामुद्दीन बस्ती में 2008 में एक शैक्षिक कार्यक्रम शुरू किया गया जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के साथ मिलकर बच्चों के अकादमिक स्तर का बेसलाइन अध्ययन किया गया। इस अध्ययन ने यह बताया कि बच्चों के अकादमिक स्तर को बेहतर करने की ज़रूरत है। एक स्रोत एजेंसी के साथ एक योजना विकसित की गई और इसकी पहली गतिविधि थी कक्षा-3 से 5 तक के बच्चों के साथ समर कैम्प लगाना। इसमें साक्षरता और संख्या ज्ञान से जुड़े कौशलों को बेहतर करने के साथ-ही-साथ रचनात्मक चिन्तन को बढ़ावा देने पर ध्यान केन्द्रित किया गया। अन्य टीएलएम के साथ ही यहाँ ऐसी वर्कशीट विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया गया जिन्हें दक्षिण दिल्ली नगर निगम (एसडीएमसी) के शिक्षक अकादमिक सत्र के दौरान भी इस्तेमाल कर सकते थे।

समर कैम्प और उपयोग किए गए टीएलएम ने सकारात्मक परिणाम दिखाए और यह निर्णय लिया गया कि इन्हें और बेहतर करने के लिए काम किया जाएगा क्योंकि यह एक दीर्घकालिक प्रोजेक्ट है।

वर्कशीट का विकास

जब आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन ने 2007 में निज़ामुद्दीन बस्ती में काम शुरू किया तो वह एक वंचित समुदाय था। वहाँ नगर निगम का केवल एक प्राथमिक स्कूल था, जो लगभग निष्क्रिय था। इसमें लगभग 100 बच्चे नामांकित थे जिनमें से केवल 50-60 बच्चे स्कूल आते थे। इसके अलावा बस्ती में कोई दूसरी शैक्षिक सुविधाएँ मौजूद नहीं थीं जबकि इसके 3-4 किमी के दायरे में अनेक निजी और सरकारी स्कूल मौजूद हैं। इस प्रोजेक्ट के बेसलाइन सर्वे और समुदाय के साथ हुई बातचीत से यह पता चला कि यहाँ के इस एकमात्र प्राथमिक स्कूल में शिक्षा की गुणवत्ता को दुरुस्त करने की बेहद ज़रूरत है।

इस प्रोजेक्ट ने स्कूल के भवन को सीखने की सहायता सामग्री के रूप में इस्तेमाल करते हुए यहाँ की भौतिक आधारभूत संरचना को दुरुस्त करने के लिए काम किया। साथ-ही-साथ ऐसे सामुदायिक शिक्षकों की नियुक्ति की गई जो वहाँ के बच्चों के यथार्थ को समझते थे, कक्षा की प्रक्रियाओं को विकसित किया गया, पाठ्यचर्या को समृद्ध किया गया और अन्ततः, स्कूल प्रबन्धन समिति एवं कई ऐसे मंचों के माध्यम से समुदाय के साथ जुड़कर उन्हें स्कूल के संचालन में शामिल किया गया।

निज़ामुद्दीन प्रोजेक्ट के स्कूल सुधार कार्यक्रम में तीन ख़ास चरण रहे हैं। चरण-1 — 2008 से 2011, चरण-2 — 2011 से 2019, चरण-3 — (कोविड 19 का समय) 2020-21 से। पहले चरण में हम समुदाय को समझने की प्रक्रिया में थे। हमने अपने कार्यक्रम को सहयोग करने के लिए एक बहुचर्चित स्रोत एजेंसी की सेवाएँ ली थीं। उन्होंने साक्षरता और संख्या ज्ञान में सहयोग करने के लिए क़रीब 250 वर्कशीट विकसित कीं। सभी वर्कशीटों में रुचिकर चित्र, पहेलियाँ और अन्य

गतिविधियाँ थीं।

साक्षरता वर्कशीटों में विकास साफ़-साफ़ दिखता था :

कक्षा-1 : चित्रों के साथ स्वरों और व्यंजनों की पहचान।

कक्षा-2 : शब्दों को मात्रा के साथ और बिना मात्रा के पढ़ना।

कक्षा-3 : शब्दों को लिखना।

कक्षा-4 : छोटे वाक्यों को लिखना।

कक्षा-5 : पाठ/ कविताएँ पढ़ना।

इसी तरह गणित की वर्कशीट में भी समान विकास दिखाई देता था :

कक्षा-1 : संख्या ज्ञान के पूर्व से शुरू करके 1 से 100 तक की गिनती, एक अंक का जोड़, ग़ायब अंकों को भरना।

कक्षा-2 : 2 और 3 अंकों वाली संख्याओं की संक्रियाएँ।

कक्षा-3 : 3 अंकों वाली संख्याओं के साथ काम करना।

कक्षा-4 : भिन्न।

कक्षा-5 : भाग।

पहले चरण के दौरान इस पद्धति का मूल्यांकन किया गया। यह अहसास हुआ कि हालाँकि इसने बच्चों को एक हद तक मदद की थी, लेकिन इसे बदले जाने की ज़रूरत थी। क्योंकि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) ने पाठ्यपुस्तकों को बदल दिया था, ख़ासतौर से, भाषा शिक्षण का तरीक़ा जिसके अन्तर्गत पहले वर्णमाला, फिर शब्द और फिर वाक्य सीखने के पुराने तरीक़े से हटकर अब समग्र भाषा शिक्षण पद्धति का रुख किया गया था। इसके अलावा जो वर्कशीट विकसित की गई थीं, उनका सन्दर्भ निज़ामुद्दीन के बच्चों के लिए जाना-पहचाना नहीं था। गणित की वर्कशीट भी इसी तरह की रेखीय प्रकृति की थीं।

वर्कशीट : क्यों और कैसे

हमने 2011 में, बच्चे कैसे सीखते हैं, इसे पहचानते हुए अपने तरीक़े में बदलाव किया। इसमें सामुदायिक शिक्षकों के साथ काम करना शामिल था ताकि वे बाल विकास के सिद्धान्तों को व बच्चे कैसे सीखते हैं, इसे जान सकें और अपने पाठों की बेहतर योजना बना सकें। साथ ही, जिन बच्चों को वे पढ़ा रहे हैं उनके लिए टीएलएम और सीखने की प्रक्रियाओं को विकसित कर सकें।

नई विकसित वर्कशीटों में बच्चों की अपनी भाषाओं का इस्तेमाल किया गया। उन कविताओं का प्रयोग किया गया जो उनके समुदाय में लोकप्रिय थीं। उन नामों का इस्तेमाल किया गया जो उनके समुदाय में ज़्यादा आम थे। उन मुहावरों और अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल किया गया जिनका इस्तेमाल बच्चे अक्सर पढ़ने के लिए करते थे। बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता कि वे किसी शब्द में ध्वनियों को और फिर उनसे जुड़े अक्षरों को अलग करें, फिर उस शब्द को पढ़ें और फिर अपने सीखे हुए अक्षरों और शब्दों पर आधारित नए शब्द बनाएँ। फिर इन शब्दों का इस्तेमाल कहानियाँ और कविताएँ रचने के लिए किया जाता।

वर्कशीट में दी गई गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को रचनात्मक होने और अपनी कल्पनाशीलता का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। गणितीय संक्रियाओं को सरल प्रक्रियाओं में तोड़ा गया, जिससे बच्चों को अधिक स्वतंत्रतापूर्वक सीखने में मदद मिली। इन संशोधित वर्कशीटों का प्रभाव बच्चों के सीखने के स्तर में दिखाई देता था। योग्यता आधारित एक मूल्यांकन ने इंगित किया कि चीज़ों का नाम लिखने, किसी चित्र का एक वाक्य में वर्णन करने, किसी कहानी/ कविता से सूचनाएँ निकालने (जिसका अर्थ हुआ बेहतर ढंग से पढ़ना और समझना) जैसी क्षमताओं में 80 प्रतिशत सुधार हुआ। गणित में, वे छोटी और बड़ी संख्याओं में अन्तर करना सीख गए थे और उन्हें बढ़ते और घटते क्रम में लिखने में समर्थ हो गए थे। कहानी को अपने जीवन के अनुभवों से जोड़ सकने की बच्चों की क्षमता में 40 से 50 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई थी। साथ ही चित्रों की मदद से गुणा और भाग की बेहतर समझ भी बन गई थी।

वर्कशीट : लॉकडाउन के दौरान और उसके बाद

बच्चों के अभिभावकों को वर्कशीट समेत एक साप्ताहिक पैकेज दिया जाता था ताकि बच्चे औपचारिक शैक्षिक प्रक्रिया से जुड़े रहें। सामुदायिक शिक्षकों[1] और नगर निगम के शिक्षकों ने मिलकर बच्चों को तीन स्तरों में बाँटा, बिना इस बात की परवाह किए कि उनका नामांकन किस क्लास में था। स्तर-1 में ऐसे बच्चे थे जो स्कूल में नए थे और वे पुराने बच्चे थे जो पढ़ नहीं पाते थे और उनकी संख्या की समझ सीमित थी (वे बच्चे जो स्कूल में अनियमित थे)। स्तर-2 में वे बच्चे थे जो छोटे-छोटे वाक्य पढ़ लेते थे लेकिन बहुत प्रवाह में नहीं पढ़ पाते थे तथा 50 से नीचे की संख्याओं की गणितीय संक्रिया कर लेते थे और शेष बच्चे स्तर-3 में थे।

शिक्षकों ने ऐसे साप्ताहिक शैक्षिक पैकेज तैयार किए जिनमें 8 वर्कशीट थीं। गणित और हिन्दी के लिए 3-3 तथा कला और पर्यावरण अध्ययन/ स्वच्छता/ धरोहर के लिए 1-1 वर्कशीट थीं। सामुदायिक शिक्षक सप्ताह में एक बार बच्चों के अभिभावकों के साथ काम करते थे ताकि फिर अभिभावक अपने बच्चों के साथ काम कर सकें। वर्कशीटों में निर्देश दिए

गए थे ताकि अभिभावक अपने बच्चों को अवधारणाओं के बारे में समझा सकें। इसके अलावा, शिक्षक किसी शंका का समाधान करने के लिए फ़ोन पर उपलब्ध थे। ऐसे अनेक उदाहरण थे जब अभिभावकों ने अतिरिक्त मदद माँगी ताकि पहले वे ख़ुद हासिल अथवा भाग अथवा गुणा जैसी अवधारणाओं को समझ सकें और फिर अपने बच्चों की मदद कर सकें। शिक्षकों ने भाषा सीखने में कविताओं और कहानियों की भूमिका के बारे में भी उन्हें बताया और बच्चे कैसे पढ़ना सीखते हैं, इसके बारे में उन्हें कुछ बुनियादी बातें बताईं। इस पद्धति का बहुत फ़ायदा हुआ, ख़ासतौर से उन अभिभावकों को जो अपने बच्चों की शिक्षा के बारे में अधिक चिन्तित थे।

स्तर-1 में, शब्दों को पहचानने के लिए विभिन्न विषयों (थीम) का चयन किया गया था। उदाहरण के लिए फल शब्द के लिए फल की तस्वीर दी गई थी। फल का नाम दोहरी लाइनों में लिखा गया था ताकि बच्चे आसानी से पढ़ सकें, उसमें रंग भर सकें और लिख सकें। बच्चों को जाने-पहचाने नाम दिए जाते थे ताकि वे ध्वनियों को अलग करके नए शब्द बना

द्वितीय चरण में प्रयुक्त वर्कशीटों के कुछ उदाहरण

कार्यपत्रक - हिन्दी

कक्षा 1

नाम.....

मुर्गी माँ घर से निकली
झोला ले बाज़ार चली
बच्चे बाले चैं-चैं-चैं
अम्मा हम भी साथ चलें

1. 'घर' और 'बाज़ार' पर गोला लगाओ।

2. खाली जगह को भरो।

मुर्गी माँ ..... से निकली

झोला ले ..... चली

बच्चे बाले .....

अम्मा हम भी ..... चलें

कार्यपत्रक - हिन्दी

कक्षा 1

नाम.....

चित्र देखकर नाम लिखो।

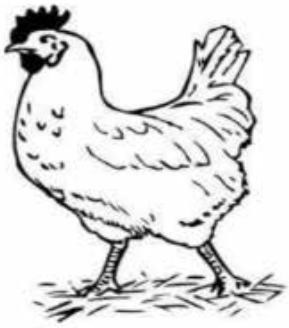

.....

.....

.....

.....

कार्यपत्रक - गणित

कक्षा 1

नाम.....

चित्रों को जमा करके खाली डब्बे में लिखें

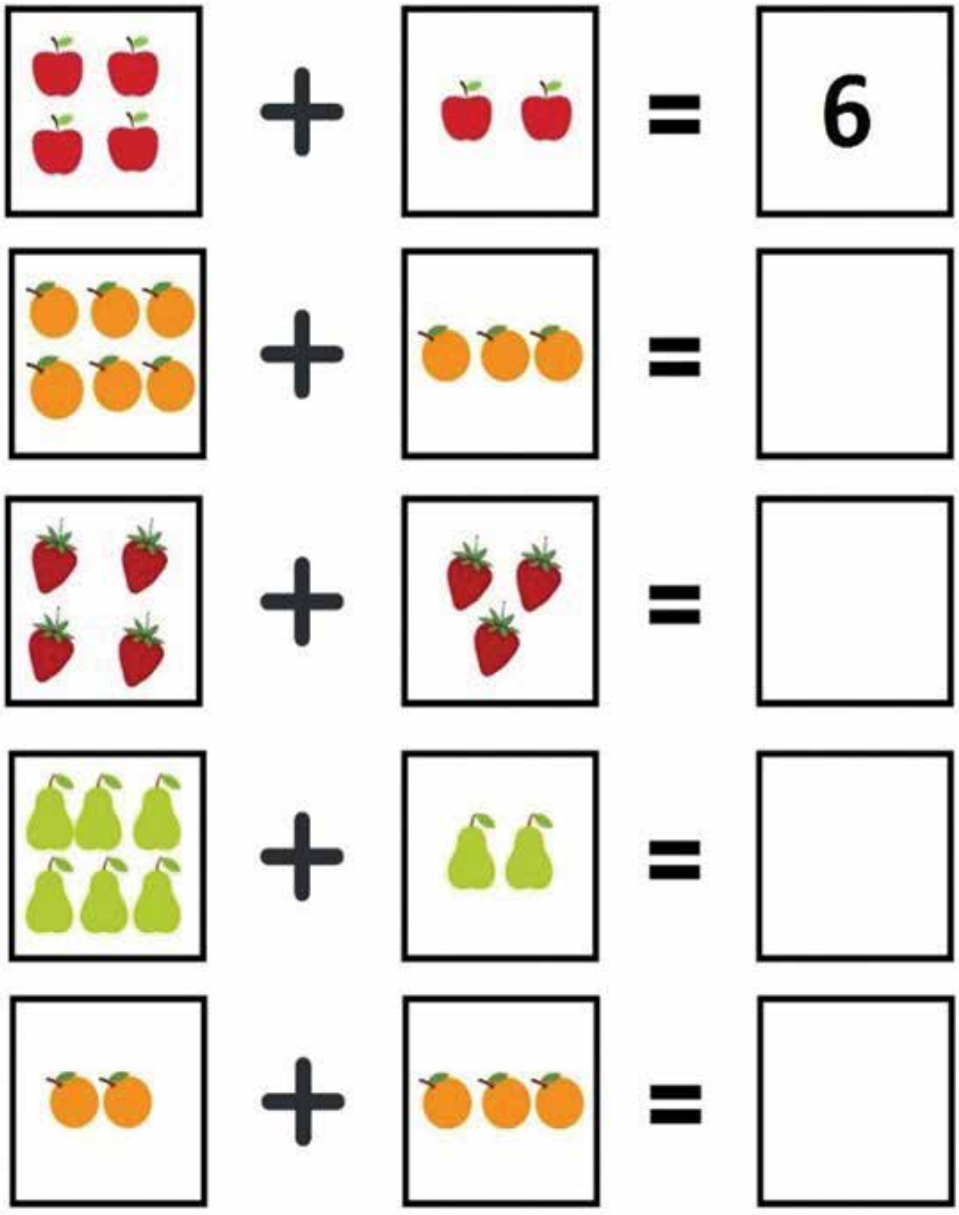

कार्यपत्रक - गणित

कक्षा 4

नाम.....

गुणा

एक ही संख्या को बार-बार जमा करने को गुणा कहते हैं।

2 + 2 + 2 + 2 = 8

दो फूल चार बार = आठ

2 X 4 = 8

3 + 3 + 3 + 3 = ☐

तीन तारे चार बार = 3 X 4 = ☐

5 + 5 + 5 = ☐

पाँच गुब्बारे तीन बार = 5 X 3 = ☐

4 + 4 + 4 + 4 + 4 + 4 = ☐

चार लड्डू छः बार = 4 X 6 = ☐

6 + 6 = ☐

छः कप दो बार = 6 X 2 = ☐

सकें। बच्चों के माता-पिता, बड़े भाई-बहनों और दोस्तों को प्रोत्साहित किया जाता कि वे एक साथ काम करें ताकि समूह में सीखने की प्रक्रिया में मदद मिल सके। स्तर-2 और स्तर-3 में भी यही पैटर्न अपनाया जाता बस उसमें जटिलता थोड़ी बढ़ा दी जाती।

गणित में, वर्कशीट की गतिविधियाँ बण्डल बनाते हुए संख्याओं, इकाइयों और दहाइयों के सांख्यिकीय गुण को समझने पर केन्द्रित रहतीं। अधिक विकसित स्तरों के बच्चों के लिए सैकड़ा और हज़ार को भी शामिल किया जाता। माता-पिता को सुझाव दिया गया था कि वे बच्चों के गिनती सीखने

के लिए विभिन्न चीज़ों का इस्तेमाल करें जैसे लकड़ियाँ, पत्थर, नोट/ सिक्के और अन्य घरेलू चीज़ें। वर्कशीट में गणितीय संक्रियाएँ भी शामिल थीं।

प्रभाव

शिक्षकों की ओर से, अभिभावकों के माध्यम से, वर्कशीट के रूप में मिलने वाले इस नियमित अकादमिक सहयोग का प्रभाव यह हुआ कि बच्चे शैक्षिक प्रक्रिया से जुड़े रहे और परिवार अपने बच्चों की शिक्षा में और ज़्यादा संलग्न हुए।

जून 2021 में बच्चों का एक औचक सैम्पल लेकर आकलन किया गया। इसने इंगित किया कि बच्चों ने अपने मूलभूत कौशल बचा कर रखे थे और कुछ कौशल पहले से और बेहतर हुए थे। पर उन कौशलों और क्षमताओं में गिरावट आई थी जिनमें चर्चा, कल्पना, रचनात्मकता और एक औपचारिक परिवेश में शिक्षकों व अन्य बच्चों के साथ संवाद की दरकार थी।

निष्कर्ष

इस लेख के लिखे जाने के वक़्त, दिल्ली में स्कूल बन्द हैं और हम वर्कशीट के साप्ताहिक पैक से साथ काम जारी रखे हुए हैं जो बच्चों की औपचारिक शिक्षा के साथ जुड़ाव की प्रमुख कड़ी है।

आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन की टीम अपने बच्चों की शिक्षा के लिए समुदाय की सहभागिता को बढ़ाने के लिए संघर्ष कर रही है। पहले, हालाँकि अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा और स्कूल के संचालन में रुचि तो लेते थे, पर वे अपने बच्चों की शैक्षिक प्रक्रिया में शामिल नहीं होते थे और उनका विश्वास था कि उनके बच्चों की शिक्षा के लिए शिक्षक और स्कूल ही पूरी तरह से ज़िम्मेदार हैं। लॉकडाउन के वक़्त अभिभावकों के साथ सीधे जुड़ाव बनाने का सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि वे अपने बच्चों की शिक्षा में और ज़्यादा रुचि लेने लगे। इसके पीछे एक कारण यह भय भी था कि उनके बच्चे पीछे छूट जाएँगे। इसके अलावा उन्हें लगा कि उनके बच्चे का नाम रजिस्टर से कट जाएगा जो कि कुछ प्रवासी परिवारों के लिए प्रतिनिधि पहचान का दस्तावेज़ था।

आख़िरी बात कि आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन ने अब एक 'वर्कशीट बैंक' का निर्माण कर लिया है। इसमें हिन्दी पढ़ने और लिखने में मदद करने वाली गतिविधियाँ हैं, गणित की लगभग सारी बुनियादी प्राथमिक अवधारणाएँ हैं और कला, धरोहर संरक्षण, स्वास्थ्य और स्वच्छता के अनेक विषय शामिल हैं जो समान क्षेत्रों में काम कर रही अन्य एजेंसियों के लिए भी उपयोगी हो सकते हैं।

Endnotes

i The Aga Khan Foundation has appointed some community teachers in the Municipal Corporation school.

ज्योत्स्ना लाल आगा ख़ान सांस्कृतिक ट्रस्ट, निज़ामुद्दीन शहरी नवीकरण पहल की कार्यक्रम निदेशक हैं। वे निज़ामुद्दीन बस्ती में चलने वाले सामाजिक विकास प्रयासों की कमान सम्भालती हैं। उनसे jyotsna.lall@akdn.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

हैदर मेहदी रिज़वी आगा ख़ान सांस्कृतिक ट्रस्ट, निज़ामुद्दीन शहरी नवीकरण पहल में कार्यक्रम अधिकारी (शिक्षा) हैं। उनसे hydermehdi.rizvi@akdn.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनीष आज़ाद **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय